SET-3

Series NSQF

कोड नं. **503/3**
Code No.

रोल नं.
Roll No. | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **12** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI

(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 90*

Time allowed : 3 hours | *Maximum Marks : 90*

निर्देश : *(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं – क, ख, ग और घ ।*

*(ii) सभी खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है ।*

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : *1×5=5*

अकाल के बीच भी अच्छे काम और अच्छे विचार का एक सुंदर छोटा-सा उदाहरण राजस्थान के अलवर क्षेत्र का है, जहाँ तरुण भारत-संघ पिछले बीस बरस से काम कर रहा है । वहाँ पहले एक अच्छा विचार आया प्रत्येक तालाब, हर नदी-नाले को छोटे-छोटे बाँधों से बाँधने का । इस तरह वहाँ और आस-पास के कुछ और ज़िलों के कोई 600 गाँवों ने बरसों तक वर्षा की एक-एक बूँद को सहेज लेने का काम चुपचाप किया । इन तालाबों, बाँधों ने वहाँ सूखी पड़ी पाँच नदियों को 'सदानीरा' का दर्जा वापस दिलाया ।

अच्छे विचारों से अच्छा काम हुआ और फिर आई चुनौती भरे अकाल की पहली सूचना । नदियों में, तालाबों में, कुओं में वहाँ तब भी पानी लबालब भरा था । फिर भी इस क्षेत्र के लोगों ने, किसानों ने यह निर्णय किया कि पानी कम गिरा है इसलिए ऐसी फ़सलें नहीं बोनी चाहिए जिनकी प्यास ज़्यादा होती है । तो कम पानी लेने वाली फ़सलें लगाई गईं । इसमें उन्हें कुछ आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा पर आज यह क्षेत्र अकाल के बीच में एक बड़े हरे द्वीप की तरह खड़ा है । यहाँ सरकार को न तो टैंकरों से पानी ढोना पड़ रहा है न अकाल राहत का पैसा बाँटना पड़ा है । लोग किसी के आगे हाथ नहीं पसार रहे हैं । उनका माथा ऊँचा है । पानी के उम्दा काम ने उनके स्वाभिमान की भी रक्षा की है ।

अलवर में नदियाँ एक-दूसरे से जोड़ी नहीं गई हैं । यहाँ लोग, गाँव नदियों से, अपने तालाबों से जुड़े हैं । यहाँ पैसा नहीं बहाया गया है, पसीना बहाया है लोगों ने और अच्छे काम और अच्छे विचारों ने अकाल को एक दर्शक की तरह पाल के किनारे खड़ा कर दिया है ।

(क) 'सदानीरा' नदी वह है जो

- (i) सदा सूखी रहती है
- (ii) सदा पानी को तरसती है
- (iii) सदा पानी से भरी होती है
- (iv) सदा बाढ़ लाती है

(ख) तरुण भारत-संघ का प्रशंसनीय कार्य है

- (i) देश सेवक तैयार करना
- (ii) गाँवों में पानी पहुँचाना
- (iii) अकाल से लड़ना
- (iv) पानी की एक-एक बूँद सहेज लेना

(ग) पर्याप्त पानी होने पर भी कम पानी वाली फ़सलें क्यों बोई गईं ?

(i) पानी की माँग बढ़ने के कारण

(ii) अकाल की संभावना के कारण

(iii) तरुण भारत-संघ के आदेश के कारण

(iv) ग्रामवासियों की इच्छा के कारण

(घ) 'सहेज लेने' से तात्पर्य है

(i) बाँट देना

(ii) दे देना

(iii) संचय करना

(iv) सुख देना

(ङ) गद्यांश से प्रेरणा मिलती है

(i) गाँव में बसने की

(ii) पर्यावरण-रक्षण की

(iii) जल संरक्षण की

(iv) तरुण भारत-संघ का सदस्य बनने की

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : *1×5=5*

मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई ग़लत सोच है । उदाहरण के तौर पर, मैं ख़ुद न्यूनतम वस्तुओंक्का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आज़ादी को बनाए रखने में सहायक है । आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि ख़ुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती । किसी बगीचे में जाइए । मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी । अथवा ऊपर की तरफ़ ही देखें, यह ब्रह्मांड आपको अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे ।

जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है । जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं । इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या ग़ैर-आध्यात्मिक बात नहीं है ।

(क) लेखक के अनुसार समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के

- (i) विरोधी हैं ।
- (ii) विरोधी नहीं हैं ।
- (iii) पूरक हैं ।
- (iv) पर्याय हैं ।

(ख) समृद्धि के साथ आते हैं

- (i) सुविधा और धन ।
- (ii) छल और कपट ।
- (iii) संपन्नता और आराम ।
- (iv) सुरक्षा और विश्वास ।

(ग) प्रकृति का स्वभाव है कि वह

- (i) बागों में बहार लाती है ।
- (ii) किसी काम को आधे मन से नहीं करती ।
- (iii) ब्रह्मांड का निर्माण करती है ।
- (iv) प्रदूषण को रोकती है ।

(घ) महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम

- (i) अजर-अमर हैं ।
- (ii) ईश्वर के अंश हैं ।
- (iii) प्रकृति के पोषक हैं ।
- (iv) ऊर्जा के अंश हैं ।

(ङ) गद्यांश का शीर्षक हो सकता है

(i) ऊर्जा का स्वरूप ।

(ii) भौतिक समृद्धि भी ज़रूरी ।

(iii) सुरक्षा और आत्मविश्वास ।

(iv) प्रकृति और हम ।

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता-संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी ?
छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगत्पति तू है,
तू यदि जूठे पत्ते चाटे, तो मुझ पर लानत है, थू है !

कैसा बना रूप यह तेरा, घृणित, पतित, बीभत्स, भयंकर !
नहीं याद क्या तुझको, तू है चिर सुंदर, नवीन प्रलयंकर ?
भिक्षा-पात्र फेंक हाथों से, तेरे स्नायु बड़े बलशाली,
अभी उठेगा प्रलय नींद से, तनिक बजा तू अपनी ताली ।

ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित,
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे ।

(क) कवि ईश्वर को जगतपति नहीं मानता क्योंकि वह

(i) राख की ढेरी बन गया है ।

(ii) समाज में समता स्थापित नहीं कर पाया ।

(iii) विलंब से कार्य करता है ।

(iv) अलख शक्ति से परे हैं ।

(ख) मनुष्यता के लिए लज्जास्पद बात है यदि

(i) ईश्वर को न माना जाए ।

(ii) ग़रीबी बनी रहे ।

(iii) ग़रीब लोग जूठी पत्तल चाटते दिखाई पड़ें ।

(iv) ईश्वर राख की ढेरी बन जाए ।

(ग) मानव का दलित-भिखारी रूप है

(i) करुणाजनक ।

(ii) वीभत्स-भयंकर ।

(iii) नवीन प्रलयंकर ।

(iv) चिर सुंदर ।

(घ) कवि का मानना है कि मनुष्य

(i) शक्ति पराजित है ।

(ii) शक्ति भंडार है ।

(iii) दरिद्र और भिखारी है ।

(iv) घृणित-वीभत्स है ।

(ङ) कवि आह्वान करता है कि मनुष्य

(i) चुपचाप सहन करना सीखे ।

(ii) सभ्य-सदाचारी बने ।

(iii) अत्याचारों को समाप्त कर दे ।

(iv) निद्रा से सम्मोहित रहे ।

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : *1×5=5*

विघ्नों का दल चढ़ आए तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,
क्षुद्र स्वार्थ की ख़ातिर हम तो कभी न गर्हित कर्म करेंगे ।
पुण्यभूमि यह भारतमाता, जग की हम तो भीख न लेंगे ।
मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे, देती हमको सदा यही है,
कदली, चावल, अन्न विविध औ' क्षीर सुधामय लुटा रही है ।
आर्यभूमि उत्कर्षमयी यह, गूँजेगा यह गान हमारा ।
कौन करेगा समता इसकी, महिमामय यह देश हमारा ।।

(क) विघ्नों के सामने हम

(i) मौन रहेंगे ।

(ii) निडर रहेंगे ।

(iii) दीन नहीं रहेंगे ।

(iv) हीन नहीं बनेंगे ।

(ख) लोग निंदनीय कर्म क्यों करते हैं ?

(i) आदत से विवश होकर ।

(ii) किसी के कहने पर ।

(iii) अपराध बढ़ाने के लिए ।

(iv) स्वार्थ के लिए ।

(ग) 'मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे देती है', अर्थात्

(i) भारत में गन्ना पैदा होता है ।

(ii) सभी आवश्यक वस्तुएँ मिलती हैं ।

(iii) भारत में फल बहुत होते हैं ।

(iv) भारत भूमि उपजाऊ है ।

(घ) भारत भूमि को कहा गया है

(i) आर्यमयी ।

(ii) कर्ममयी ।

(iii) उत्कर्षमयी ।

(iv) सुधामयी ।

(ङ) कोई देश भारत की बराबरी नहीं कर सकता, क्योंकि भारत

(i) बड़ा देश है ।

(ii) शक्तिशाली देश है ।

(iii) महिमामय देश है ।

(iv) आर्यभूमि है ।

खण्ड ख

5. निर्देशानुसार कीजिए : *1×3=3*

(क) जब तुम आए मैं जा चुका था । (वाक्य-भेद बताइए)

(ख) यही वह घड़ी है जो चाचा जी ने दी थी । (सरल वाक्य में बदलिए)

(ग) वह स्कूल से लौटकर खेलने चला गया । (संयुक्त वाक्य बनाइए)

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए : *1×4=4*

(क) अध्यापक समझा रहे हैं । (कर्मवाच्य में)

(ख) आपसे इतना भी नहीं किया गया । (कर्तृवाच्य में)

(ग) क्या आप आ सकेंगे ? (भाववाच्य में)

(घ) क्या तुम देख नहीं सकते ? (कर्मवाच्य में)

7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : *1×4=4*

<u>काले</u> <u>बादलों की</u> गरज सुनकर <u>मैं</u> तेज <u>भागा</u> ।

8. (क) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में निहित रस का उल्लेख कीजिए : *2*

(i) तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान ।

(ii) भरे मौन में करत हैं नैननि ही सों बात ।

(ख) (i) हास्य रस का एक उदाहरण लिखिए ।

(ii) रसराज किसे कहा जाता है ? *2*

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2+2+1=5*

हाथ उठा-उठा कर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में रहना मेरे लिए । जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना ।

(क) 'उनके लिए' सर्वनाम किसके लिए आया है ? उन्हें क्या कठिनाई थी ?

(ख) लेखिका के लिए स्वयं क्या करना कठिन था ? क्यों ?

(ग) 'रगों में लहू बहना' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है । उसमें सीखने-योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है । पढ़ना-लिखना भी उसी के अंतर्गत है । इस देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना चाहिए, ख़ुद पढ़ने-लिखने को दोष नहीं देना चाहिए । लड़कों की शिक्षा प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है । प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ?

(क) 'शिक्षा' व्यापक शब्द है – कैसे ?

(ख) प्रणाली दोषपूर्ण हो तो क्या करना चाहिए ? क्यों ?

(ग) प्रणाली बुरी हो तो भी क्या नहीं किया जाता ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *2×5=10*

(क) बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए ।

(ख) स्त्री शिक्षा के समर्थन में महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत किन्हीं दो तर्कों को लिखिए ।

(ग) मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व में उनके पिता का क्या प्रभाव दिखाई पड़ता है ?

(घ) काशी में हो रहे किन परिवर्तनों से बिस्मिल्ला खाँ व्यथित रहते थे ? किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए ।

(ङ) 'स्त्रियों के द्वारा प्राकृत में बोलना उनके अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है' – पुष्टि कीजिए ।

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2+2+1=5*

कौसिक सुनहु मंद येहु बालक । कुटिलु काल बस निज कुल घालक ।।
भानुबंस राकेश कलंकू । निपट निरंकुस अबुध असंकू ।।
कालकवलु होइहि छन माही । कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ।।
तुम्ह हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रताप बल रोषु हमारा ।।

(क) काव्यांश की पृष्ठभूमि की घटना क्या थी ? यह कथन किसका है ?

(ख) लक्ष्मण के लिए क्या-क्या कहा गया है ?

(ग) 'कौसिक' कौन हैं ? उन्हें क्या करने को कहा गया है ?

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलाने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री-जीवन के ।

(क) आशय स्पष्ट कीजिए :
'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलाने के लिए नहीं'

(ख) माँ की किन्हीं दो सीखों को अपने शब्दों में लिखिए ।

(ग) 'शाब्दिक भ्रम' का क्या तात्पर्य है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *2×5=10*

(क) लक्ष्मण के अनुसार वीर और कायर के स्वभाव में क्या अंतर है ?

(ख) धनुर्भंग के पक्ष में परशुराम के समक्ष लक्ष्मण ने क्या तर्क दिए ?

(ग) 'कन्यादान' कविता नारी को कैसे सचेत करती है ?

(घ) मुख्य गायक के साथ संगतकार की क्या भूमिका होती है ?

(ङ) लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर लक्ष्मण के स्वभाव की दो विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

13. लोंग स्टॉक में घूमते हुए लेखिका को क्या अनुभूति हुई ? इस प्रसंग से किन जीवन-मूल्यों का परिचय मिलता है ? *5*

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर लगभग 250 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए : *10*

(क) <u>अविस्मरणीय घटना</u>

- भूमिका
- कब – कहाँ
- घटना का स्वरूप
- अविस्मरणीय क्यों
- उपसंहार

(ख) <u>मेरा देश</u>

- भूमिका
- भौगोलिक विशेषता
- सांस्कृतिक विशेषता
- देश की प्रगति
- उपसंहार

(ग) <u>यदि मैं प्रधान मंत्री होता</u>

- भूमिका
- इच्छा का कारण
- क्या-क्या करना आवश्यक
- कैसे
- उपसंहार

15. पिताजी के प्रति अनजाने में हुई एक भूल के लिए आप इतने लज्जित हैं कि सामने क्षमा भी नहीं माँग पा रहे । पत्र द्वारा बात स्पष्ट करते हुए क्षमायाचना कीजिए । *5*

16. निम्नलिखित अनुच्छेद का सार लगभग 35 शब्दों में लिखिए और शीर्षक भी दीजिए : *5*

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में आए दिन हम जिन लेखों और विश्लेषणों को पढ़ते हैं वे राजनीतिक तक़ाज़ों से लाभ-हानि का हिसाब लगाते हुए लिखे जाते हैं, इसलिए उनमें पक्षधरता भी होती है और पक्षधरता के अनुरूप अपर पक्ष के लिए व्यर्थता भी । इसे भजनमंडली के बीच का भजन कह सकते हैं । सांप्रदायिकता, अर्थात् अपने संप्रदाय की हित-चिंता अच्छी बात है । यह अपनी व्यक्तिगत क्षुद्रता से आगे बढ़ने वाला पहला क़दम है, इसके बिना मानव-मात्रकी हित-चिंता, जो अभी तक मात्र एक ख़याल ही बना रह गया है, की ओर क़दम नहीं बढ़ाए जा सकते । पहले क़दम की कसौटी यह है कि वह दूसरे क़दम के लिए रुकावट तो नहीं बन जाता । बृहत्तर सरोकारों से लघुतर सरोकारों का अनमेल पड़ना उन्हें संकीर्ण ही नहीं बनाता, अन्य हितों से टकराव की स्थिति में ऐसी जड़ता और पंगुता उत्पन्न करता है जिससे हमारी प्रगति रुक सकती है ।